॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : २ मई २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - २, मई, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये

पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. अग्निकाय की विद्युत्त से तुलना	डॉ. जीवराज जैन	५८
२. पुरुलिया के पुरातत्व	श्री सुभाष राय	६३
३. श्री चन्द्रराज चरित्र		७२

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

अग्निकाय की विद्युत्त से तुलना

डॉ० जीवराज जैन

(भाग—२)

१. अग्नि और विद्युत्त तेजस्काय :–

आगमों में, तेऊकाय का वर्णन अग्निकाय और विद्युत्तकाय नाम से दो प्रकार का आता है। आज के वैज्ञानिक संदर्भ में यह बिल्कुल तर्कसंगत भी है। पुराने जमाने में जब कृत्रिम–बिजली से साधारण जनता अनभिज्ञ थी यानि कृत्रिम बिजली कल्पनातीत थी, तब केवल प्राकृतिक बिजली यानि तड़ित-विद्युत्त ही उनकी समझ में उपलब्ध थी। उस समय विद्युत्तकाय को अग्निकाय की तरह तेऊकाय में सम्मिलित कर पाने की ज्ञानियों की क्षमता वास्तव में आश्चर्यजनक और प्रशंसनीय है। गौरतलब है कि भवनपति देवता को भी अग्निकुमार व विद्युत्तकुमार नाम से दो भिन्न भिन्न प्रकार के देवता बताये गये है। अतः अग्नि और विद्युत दोनों को एक ही प्रकार की अग्नि न मानकर, स्पष्ट रूप से दो भिन्न भिन्न प्रकार की तेऊकाय माना गया है, ऐसा समझ में आता है । आज के युग में, जब कृत्रिम बिजली हर व्यक्ति की दिनचर्या में इस प्रकार व्यापक रूप से समा गई है कि किसी भी बच्चे की बिजली शब्द से अनभिज्ञता नहीं है। लेकिन उस जमाने में तो सुदूर बादलों में मौसम-विशेष में चमकने वाली विद्युत्त को, जीव-अजीव की श्रेणी में बांटना, बहुत सूक्ष्म और गहन चिंतन की ही देन हो सकती है। इसी संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, हम अपने विश्लेषण में दोनों प्रकार के तेऊकाय यानि–अग्नि और विद्युत को स्पष्ट रूप से अलग अलग श्रेणी में रखते हुए अध्ययन करेंगें।

२. अग्निकाय का वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

जैन आगमों में स्पष्ट बताया गया है कि अग्निकाय एकेन्द्रिय जीव है यानि विभिन्न प्रकार की अग्नि को सचित्त माना गया है। इस संदर्भ में देखियें

भाग–१ में उद्धरित सूत्र आधार। हर जैन संप्रदाय इस तथ्य को, बिना किसी अपवाद के, सत्य मानता है। इसके सचित्त होने के लिये निम्न पाँच लक्षण या अनिवार्य शर्तें नजर आती हैं।

यथा :

१. ईंधन अपने ज्वलांक बिंदु तक गर्म होता है। यानि उस तापक्रम पर पहुँचता है, जिस पर वह जल सकता है।

२. इसमें ऑक्सीजन (हवा) के साथ जलने की रासायनिक क्रिया होती है। यानि हवा का उपयोग और खर्च होता है।

३. इस क्रिया में ताप (अवरक्त किरणों का) व प्रकाश (दृश्य किरणों का) उर्जा का उत्सर्जन (पैदा होकर निकलना) अनिवार्य होता है।

४. जलना एक n स्वपोषी a (spontaneous) रासायनिक क्रिया होती है, जो सामान्यतः एक्सोथर्मिक होती है।

५. इसमें कभी-कभी ध्वनि का उत्सर्जन भी हो सकता है।

२.१. वैज्ञानिक ढंग से यह विश्लेषण करने पर कि उस अग्नि में क्या क्रिया होती है तथा वह क्या है, हम पाते है कि अग्नि जब जलती है तो ईंधन पदार्थ के अणु के संयोजक या बाहरी कक्ष के इलेक्ट्रोन अपनी उच्च स्थिति-उर्जा से निकल कर, निम्न लेकिन स्थायी स्थिति–ऊर्जा में अवस्थित होते हैं। ऊर्जा की दोनों स्थितियों के अंतर (difference) की मात्रा का ताप और प्रकाश ऊर्जा में परिवर्तित (conversion) हो जाता है। इस क्रिया में न तो स्थिति–ऊर्जा को और न ताप और प्रकाश ऊर्जा को सचित्त माना गया है। सचित्त माना गया है इलेक्ट्रोन के विस्थापित होने की प्रक्रिया द्वारा पदार्थ की बदली हुई पर्याय से बनती हुई एक नई योनि उसमें व्यय होती आत्मा के संयोजन की। यह नई योनि क्षणिक ही प्रतीत होती है। क्योंकि जैसे ही विस्थापन की प्रक्रिया समाप्त होती है उस अणु की योनि खत्म हो जाती है। लेकिन उसकी जगह दूसरे परमाणुओं द्वारा ऐसा नई योनियों का निर्माण बराबर आगे जारी रहता है। तथा वे पीछे बराबर बुझती रहती है यानि वापिस अचित्त बनती रहती हैं।

२.२ यहाँ एक अहम् बात ध्यान देने योग्य है। भगवती सूत्र में अग्नि के बारे में पूछे प्रश्नों के उत्तर में इस प्रकार फरमाया है–

(भगवती ८/६) प्रश्न १५ : जलते हुए दीपक में क्या जलता है? क्या दीपक जलता है, दीपयष्टि जलती है, बत्ती जलती है, तेल जलता है, दीपक का ढक्कन जलता है, या दीपशिखा जलती है? उत्तर में बताया गया है–दीप नहीं जलता है, दीपक का ढक्कन भी नहीं जलता, परन्तु दीप-शिखा जलती है।

प्रश्न१६– जलते हुए घर में क्या जलता है? क्या घर जलता है, खसखस की टाटी (टही) जलती है, मुख्य स्तम्भ जलता है, लम्बा काष्ट (Beam) जलता है, क्या बांस जलते हैं, चटाई जलती है या अग्नि जलती है?

उत्तर– घर नहीं जलता है, भीत नहीं जलती है, चटाई नहीं जलती है, किन्तु अग्नि जलती है।

तब प्रश्न उठता है कि यह दीप-शिखा या अग्नि क्या है, जो जलती है ? विज्ञान के अनुसार उत्तर होगा कि यह ज्वलांक-बिन्दु तक गर्म हुआ ईंधन है–यानि कार्बन का पर्याय पदार्थ है। ज्यादातर तो यह गैस रूप में ही परिवर्तित हुआ पदार्थ है। जिससे आग की लपटें बनती है। लेकिन यदि उस गति (speed) से गैस नहीं बन पाती है, जिस गति से जलने की रासायनिक क्रिया संपन्न होती जा रही है, तब क्या होगा? उस स्थिति में लपटे नहीं बन पायगी। तब केवल ज्वलांक-बिंदु तक गर्म हवा, तरल या ठोस ईंधन अपने सतही अणुओं और परमाणुओं के इलेक्ट्रोन्स की, ऑक्सीजन के परमाणुओं के बाहरी कक्ष के इलेक्ट्रोन्स के साथ भागीदारी स्थापित करता है। ईंधन की इस अवस्था में, इलेक्ट्रोन के विस्थापित होने की क्रिया इतनी तीव्र (Violent) नहीं हो सकती, जितनी की गैस अवस्था में आसानी से होती है। जलने की गति मंद होती है। फिर भी इस विस्थापना की प्रक्रिया में परिवर्तित स्थिति-उर्जा उस पदार्थ को बराबर गर्म करती रहती है (ज्वलांक बिन्दु तक) तथा बाकी की बची ऊर्जा ताप व कुछ प्रकाश पैदा करने में खर्च हो जाती है।

३. **तेऊकाय से तुलना** : उसी प्रकार जब विद्युत सुचालक-पदार्थ में बहती है, तब इलेक्ट्रोन की गतिज-उर्जा, (हीटर और बल्ब में) ताप और प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है। यहाँ गतिज-ऊर्जा के परिवर्तन के दौरान, तेऊकाय की योनि बनने की संभावना तो प्रतीत होती है। इसमें भाग लेने वाले इलेक्ट्रोनस फ्री (स्वतंत्र) इलेक्ट्रोंस भी हो सकते हैं, या पदार्थ के अणुओं/ परमाणुओं की बाहरी कक्ष में अदल-बदल होते इलेक्ट्रोंस भी हो सकते हैं (जैसे वाल्ट्सर नाच में)। जिस अणु में यह अदला-बदली होती है, उसमें इलेक्ट्रोन की गतिज-ऊर्जा के परिवर्तन से ताप व प्रकाश पैदा होता है, तथा उस अणु की पर्याय बदलती है। उस बदली हुई पर्याय में उचित योनि बनने की क्षमता भी होती है। तथा उसमें आत्मा के 'च्य' होने की लायकी भी। अतः यह सचित्त हो सकती है।

४. **अहम् मुद्दा** – अब यदि हम इस प्रक्रिया द्वारा सचित्त–योनि बनने में शक करते हैं, लेकिन अग्नि में हो रहे इलेक्ट्रोन–विस्थापन में सचित्त-योनि बनने की घटना को पूरी मान्यता दे देते हैं, तो स्वभावतः प्रश्न उठते हैं कि–

४.१. वह क्या प्रक्रिया है जो इलक्ट्रोन की स्थिति–ऊर्जा के परिवर्तन को सक्षम मानती है, लेकिन उसी इलेक्ट्रोन की गतिज-ऊर्जा के परिवर्तन (conversion) को सक्षम नहीं मानती है, सचित्त योनि बनाने मे। जब कि दोनों का परिवर्तन ताप और प्रकाश ऊर्जा में ही होता है?

इस मूल प्रश्न का उत्तर ढूँढने के लिए, हमें निम्न ४ आगमिक / आध्यात्मिक बातों को ठीक से समझ लेना होगा।

४.२. **चार अनुत्तरित आगमिक प्रश्न :**

४.२.१ जलने के घटना क्रम में पदार्थों के पुदगल कब 'पर्याप्तियें' प्राप्त कर सचित्त अग्निकाय बन जाते है, तथा ताप और प्रकाश का उत्सर्जन करते हैं ?

४.२.२ जब विद्युत–प्रवाह भी ताप और प्रकाश का उत्सर्जन कर सकता है, तो वे पुद्गल क्यों पर्याप्ति प्राप्त करके सचित्त नहीं बन सकते, जब कि सूक्ष्मस्तर पर इसमें भी तो वो ही इलेक्ट्रोन भाग लेते है?

i. इसमें अग्निकाय की तरह, विज्ञान की भाषा में वो इलेक्ट्रोन एक दूसरे पदार्थ (मूलतः ऑक्सीजन) के साथ केवल अपनी भागीदारी partnership) स्थापित नहीं करता है। उसकी जगह वह छिटकाव के साथ निकल कर इलेक्ट्रोन की अदला-बदली (Exchange) करता हैं दूसरे अणु के साथ।

ii. अतः जीव–शक्ति बनने के लिये उनमें क्या परिवर्तन बाकी रह जाता है तथा पूरा होने के लिये क्या शर्त पूरी होनी बाकी रह जाती है?

४.२.३. जैसे अग्नि अपनी ५ शर्तो के पूरी होने पर सचित्त बनता है, वैसे ही क्या विद्युत्त काय भी, विद्युत्त-प्रवाह द्वारा, अपनी कुछ मूल शर्तो के पूरी होने पर सचित्त बन सकती है?

e.g. जैसे कुछ रासायनिक क्रियाएँ, जिनमें ताप पैदा होता है, तथा हवा भी भाग लेती है, फिर भी सचित्त अग्निकाय नही बनाते हैं, क्योंकि उनमें फोटोन का उत्सर्जन नहीं होता है।

४.२.४. यह भी शोध होनी चाहिये कि जब आकाशीय प्लाज्मा (तड़ित) को सचित्त विद्युत्त-काय की श्रेणी में रखा गया है, तो उसमें तथा

i. सचित्त अग्निकाय में क्या भिन्नता है, और उसमें

ii. तथा विद्युत्त–प्रवाह से चमकते बल्ब या हीटर में क्या मूल-शर्त का अभाव रहता है?

इन परिस्थितियों को समग्र रूप से समझने के प्रयास होने चाहिए।

इनका उत्तर ढूंढना बहुत आवश्यक हो गया है, खास कर उन आगमविदो के लिए, जो बिजली से चलते हीटर और बल्ब को सचित्त नहीं मानते हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि दोनों प्रक्रियाओं में मूलतः अंतर यही हुआ कि एक में इलेक्ट्रोन की स्थिति–ऊर्जा (जलती अग्नि) और दूसरे में उसकी गतिज–उर्जा (कृत्रिम-बिजली प्रवाह) के परिवर्तन की बात हो रही है। एक दृष्टि से अंतर केवल कूदते हुए और बहते हुए इलेक्ट्रोन के लक्षणों का है। हालांकि उनका बहना साधारणतया समान प्रकार के अणुओं में, उनको एक प्रभावी क्षेत्र (field) से जोड़ते हुए है। जबकि कूदना एक पदार्थ की दूसरे पदार्थ के साथ उसकी भागीदारी स्थापित करते हुए है।

५. भगवती सूत्र का संदर्भ :- निम्नलिखित शर्त, जो भगवती सूत्र में वर्णित है, को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है। भगवती सूत्र -श.१६/ ३/१, प्रश्न २ में पूछा गया है: सिगड़ी में अग्निकाय कितने काल तक सचित्त रहता है? ध्यान देने की बात है कि यह प्रश्न विशेष रूप से केवल सिगड़ी में जलती हुई अग्नि के बारे में किया गया है। अन्य अग्निकाय व तेऊकाय के बारे में नहीं। अतः इसके उत्तर को भी उसी संदर्भ में समझना चाहिए। इसका उत्तर इस प्रकार दिया गया है :

जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीन दिन-रात तक सचित्त रहता है।

वहाँ अन्य वायुकायिक जीव भी उत्पन्न होते हैं। क्योंकि वायुकाय के (पैदा हुए) बिना अग्निकाय प्रज्वलित नहीं रहता। यानि कोयले की सिगड़ी में जब अग्नि जलती है, तो रासायनिक प्रक्रिया द्वारा जो हवा बनती है (कार्बन डाई ऑक्साइड CO_2 सल्फर डाई ऑक्साइड — SO_2 आदि) वो भी सचित्त वायुकायिक जीव हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहा गया है कि जहाँ अग्निकाय पैदा होता है, वहाँ वायुकाय के जीव भी उत्पन्न होते है।

लेकिन ऐसा वर्णन, विद्युत्त (तड़ित) के बारे में, कहीं भी आगम में नहीं मिलता है कि क्या (i) विद्युत से भी वायुकायिक जीव उत्पन्न होते हैं? अथवा (ii) वायुकाय के उत्पन्न हुए बिना विद्युत (तड़ित) प्रज्वलित नहीं रहता।

हालांकि गौर से देखा जाय तो प्लाज्मा में भी हवा की भागीदारी इसी प्रकार की रहती है। जहाँ प्लाज्मा बनता है, वहां हवा की आवश्यकता रहती ही है। बिना हवा के प्लाज्मा नहीं बन सकता है। यह हवा यानि गैस रूप पदार्थ सचित्त वायुकाचित योनि हो सकती है।

प्लाज्मा के बुझते वक्त जो हवा बनती है, वह अनाविष्ट हवा तथा निष्क्रिय ऑक्सीकृत हवा (जैसे NO_2, O_3 ओजोन आदि) होती है। वो भी सचित्त वायुकायिक हो सकती है। लेकिन यह प्रक्रिया exothermic नहीं होने के कारण स्वपोषित नहीं होती है। क्योंकि सचित्त अग्निकाय का एक लक्षण उसका स्वपोषी (spontaneous) होना भी समझ में आता है, अतः हवा के ऐसे उत्पाद पैदा होने की प्रक्रिया, अग्निकाय के जलने की श्रेणी में नहीं आती हैं।

६. **सचित्त प्लाज्मा** —

६.१ चूंकि प्लाज्मा सचित्त तेऊकाय की श्रेणी में आता है, तो यह विश्लेषण करना उचित होगा कि उसमें क्या क्या होता है?

६.१.१. उसमें गैस माध्यम का आयनीकरण होता है।

६.१.२. इलेक्ट्रोन की अदला-बदली व प्रवाह होता है।

६.१.३ ऊर्जा परिवर्तन से ताप और प्रकाश का उत्सर्जन होता है।

६.१.४ जब तक वोल्टेज का दबाव बना रहता है, तब तक विद्युत प्रवाह भी बना रहता है।

६.२. इससे यह सिद्ध होता है कि चिन्गारी (स्विच में), वेल्डिंग-चाप, आर्क-भट्टी की चाप तथा स्पार्क इरोजन मशीन की चिन्गारी भी सचित्त विद्युत की श्रेणी में आती है, क्यों कि उनमें ऊपर वर्णित चारों क्रियाएं होती है।

६.३. जिस प्रकार जलने में समान प्रकार की रासायनिक क्रिया होने के कारण दीप-शिखा व अंगारा दोनों को सचित्त अग्निकाय की श्रेणी में रखा गया हैं, वैसे ही क्या 'प्लाज्मा' व 'हीटर' में इलेक्ट्रोन-प्रवाह की समान प्रकार की भौतिक क्रिया होने के कारण, दोनों को समान रूप से सचित्त--विद्युतकाय की श्रेणी में रखा जा सकता है?

इसमें फर्क केवल उपरोक्त पहली शर्त में, यानि आयनी करण की प्रक्रिया में नजर आता है। बाकी तीनों लक्षण समान है।

७. सारांश :

उपरोक्त प्रश्न का भी, पूर्व वर्णित ४ आगमिक प्रश्नों के साथ, समुचित उत्तर पाने के लिए, और ज्यादा गहन चिन्तन की आवश्यकता है तथा आगमों का इस वैज्ञानिक दृष्टि से मनन करना भी आवश्यक है। इन अनुत्तरित प्रश्नों के कारण हम अभी तक यह सिद्ध करने की स्थिति में बिल्कुल नहीं हैं कि हीटर में प्रवाहित होने वाली विद्युत-उर्जा उसको सचित्त नहीं बनाती हैं। अतः बिना किसी पूर्वाग्रह के हमें अपने वैज्ञानिक और आगमिक चिंतन को जारी रखते हुए सर्वप्रथम उपरोक्त पाँच प्रश्नों के समुचित उत्तर ढूंढने चाहिए।

पुरुलिया के पुरातत्व

श्री सुभाष राय

इतिहास के प्रथम पर्व में वर्तमान पुरुलिया या मानभूमि का कोई अस्तित्व नहीं था। यह जगह असल में अंग, बंग व कलिंग के बीच बँटा हुआ एक क्षेत्र था। भविष्य पुराण में उल्लेख है :–

अथेदानीं झारीखंड – जांगलं देशो रिच्यते।
दारिकेशादुत्तरे च घष्ट योजन मानतः।।
पंचकूट पार्श्वभागे भागीरथ्यश्चि पश्चिमे।
जांगलो झारीखंडश्च देशं कीकटसन्निघौ।।

अर्थात् दारकेश्वर नदी के उत्तर में, भागीरथी नदी के पश्चिम एवं पंचकोट पहाड़ के पास जंगल में ढँका झारखंड कीकट देश के नजदीक था।

प्राचीन ऋग्वेद में कीकट देश का उल्लेख है। वह असल में अनार्यों का देश था। महाभारत में दीर्घतमा की कहानी है। वे वृहस्पति के शाप से जन्मान्ध पैदा हुए थे। दीर्घतमा की पत्नी प्रद्वेषी थी। कलिराजा के राज्य में महारानी की धात्री के गर्भ से उनके ग्यारह बेटों ने जन्म लिया था। ये ग्यारह बेटे, ग्यारह छोटे छोटे इलाकों के अधीश्वर थे। रानी सुदेष्वा के गर्भ में दीर्घतमा पाँच बेटों को जन्म देते है। यहीं पाँच बेटे अंग, बंग कलिंग, पुण्ड्र और शुभा हैं। उनके द्वारा अधिकार में लाए गए इलाकों का नाम उन्हीं के नाम पर पड़ा। रानी सुदेष्णा एवं दीर्घतमा के पहले बेटे का नाम अंग है। इसका आनुमानिक समयकाल १२१४ ई० पू० है। अंग आज का पूर्व बिहार है। अंग की राजधानी चंशा या चशापुरी थी। इन दिनों विलुप्त हो चुके मानभूम जिले का उत्तर पश्चिमी इलाका, विशेष रूप से दामोदर नदी के उत्तरी छोरवाला भूभाग अंग राय के अन्तर्गत था।

৩ महाभारत में हम जानते है कि अंगराज कर्ण थे। वे सुम्ह, पुंड्र और बंग को जीतकर, बंग और अंग को एक राज्य में परिणत करने में कामयाब

हुए थे। बुद्धदेव के समय भ्रक्षदेव अंग के राजा थे। रामायण और महाभारत के युग में दामोदर–सुवर्णरेखा नदियों के बीच के अंचल में दो राज्यों का उद्भव हुआ था। इनमें एक था सुम्ह और दूसरा था ताम्रलिप्त। पांडुपुत्र भीम सम्भवतः ताम्रलिप्त पर विजय प्राप्त किये थे। पुरुलिया जिले का पूर्वांश हो सकता है किसी समय सम्पूर्ण ताम्रलिप्त राय के अन्तर्गत था। पाटलिपुत्र से आते समय दामोदर के पार जिस राह से आना होता था, वह मानभूम के ऊपर से ही होकर गुजरता था। १८७२-७३ ई० में जे. डी. बेगलार इसी राह से, पाटलिपुत्र से हुगली आए थे।

पुरुलिया पहले मानभूम के नाम से जाना जाता था। अभी भी, नाम के साथ एवं जनगोष्ठी के साथ मान शब्द जुड़ा हुआ है। जैसे– मानबाजार, मालकियारी, माभ्रसी, मानटाँड, मालजुड़ि, मानग्राम, मानझोपड़ आदि। फिर मानबाजार और पुंचा इलाके में माना बाउरी नाम से एक प्राचीन जनगोष्ठी का पता चलता है। सवाल उठता है कि यह मानभूम शब्द आया कहां से? हजारीबाग जिले के दुधापानी पहाड़ पर तीन भाई–उदयमाल, धौतमाल व अजित माल के नाम खुदे हुए मिलते है। क्या इन तीन भाईयों के नाम पर ही जगह का नाम नामभूम पड़ा? किसी-किसी का कहना है कि मान किसी राजवंश का नाम है। यही वह वंश है, जिसका शासन मानभूम, सिंहभूम और उससे जुड़े उड़ीसा के कुछ अंचलों पर था। ओड्र जाति की एक शाखा के रूप में मानवंश का निरूपता किया गया था। अध्यापक मिराशी के अनुसार मान उपाधि वाले राजा, राष्ट्रकूट वंश के एक शाखा के रूप में थे। इनके आदि पुरुष का नाम मानांक है। चौथी शताब्दी के अंतिम काल में इनका शासन था। करीब सौ वर्षों के बाद उनके परपोते (प्रपौत्र) अभिमन्यु ने वहाँ राजधानी स्थापित की। उसका नाम रखा गया मनपुर या मानपुर। आज मानपुर सतारा जिले में अवस्थित है। शतारा में करीब ढाई सौ साल इस वंश ने राज किया था। मानांक के बेटे का नाम देवराजा था। देवराजा के तीन बेटे थे, जिनमें सबसे बड़े का नाम मान राजा था। मानपुर नगर के केन्द्र में रखकर मानांग ने जिस राज्य की प्रतिष्ठा की थी मध्ययुग के प्रथम पर्व में वही मानदेश कहा जाता था। बीरभूम, बाँकुड़ा, मेदिनीपुर,

२४ परगना और पुरुलिया जिलों में मान राजवंश के विभिन्न अवशेष विखरे हुए है। हमारे इस पुरुलिया जिले में ही मानपुर के नाम से सात गाँव है। इस मामले में वर्धमान जिले के मानकर का नाम बरबस याद आता है।

मानभूम, अंग्रेजों के समय जंगल महल के नाम से प्रसिद्ध था। तेइस परगनों और महल को लेकर जंगल महल जिले का निर्माण हुआ था। इसका मुख्य कार्यालय बाँकुड़ा शहर में था। गंगा नारागता के विद्रोह के बाद जंगलमहल जिला टूटकर मानभूम जिले का जन्म हुआ। इसका मुख्य कार्यालय मानबाजार में स्थित था। बाद में कार्यालय पुरुलिया में स्थानांतरित किया गया। उस समय का मानभूम धलभूम तक फैला हुआ था। बिहार का काफी सारा इलाका इसके अन्तर्गत आता था। १९५६ में आज के पुरुलिया ने जन्म लिया। यहाँ के आंचलिक लोग आनन्द से झूम उठे थे। राधारानी देवी और नरेन्द्रदेव ने उस समय मुक्ति नामक पत्रिका में लिखा था—

आज इस मानभूम पर हम
(इस) शुभदिन पर जयगान करे।
धन्य हुई है माँ हमारी
बच्चों को उर से जकड़ें।

आज यह मानभूम लोकसंस्कृति में असन्न समृद्ध अंचल है। सारा साल लोक उत्सव, लोकनृत्य के आनन्द में ही यहाँ के निवासियों का दिन कटता है। मानभूम की एक और विशेषता है यहाँ के फैले बिखरे हुए पुरातात्विक अवशेष। पुरुलिया के गाँवों में घूमते समय कही न कहीं सदियों पुराने खंडहर, ध्वंसावशेष जरूर देखने को मिलेगा। यहाँ जिन इलाकों में पुरातात्विक अवशेष मिलते है, वे है—पाकबिड़रा, तेलकूपी, बुधपुर, बारमास्या, लाखरा, टुश्यामा, देउली, महादेवबेड्या, रालिबेड्या, छड़रा, पाड़ा, देउलगिड्या, गजपुर, क्रोशजुड़ी, धड़ांगा, बनरांगपुर, गुइमा, हेर्बना आदि। न जाने कितने और पुरातात्विक अवशेष मिट्टी के नीचे दबे पड़े हैं। न सरकार को इनकी फिक्र है, और न इन सुप्राचीन खंड़हरों, मूर्तियों को धूप या बारिश या प्राकृतिक चपेटों से बचाने के लिये इलाके के लोगों में किसी प्रकार का पहल है। ये दुर्लभ मूर्तियां चोरबाजारुओं के हाथों बिककर विदेशों में चली

जा रही है। आज से बच्चों के खेलने का सामान है। सदियों पहले जिन कुशल मूर्तिकारों ने इन पत्थरों को तराशकर इन मूर्तियों का निर्माण किया था, आज उन मंदिरों मूर्तियों को हमं कितनी बेरहमी से नष्ट कर रहे हैं। लेकिन हमें अपने शिक्षित या सभ्य होने पर न जाने कितन गर्व होता है। आज भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में एवं पुरातात्विक ऐतिहासिक हर दृष्टिकोण से पुरुलिया के ये खंडहर कितने अपरिसीम महत्व की जानकारी, विलुप्त होती हुई कड़ियाँ, अनसुलझे सवालों का जवाब, अपने में बसाए हुए है, और हम है कि इन्हें गूंगा ही मार डालना चाहते हैं। खुद को संस्कृतिवान कहते समय, काश! एकबार हमें पुरुलिया के ये खंडहर याद आते।

खैर, आज का मानभूम, पुरुलिया की मंदिर नगरी है। ९वीं से १३वीं सदी तक आज के पुरुलिया में, इन अनगिनत गाँवों में सुविशाल मंदिर बने हुए थे। इन मंदिरों में अपूर्व शैली व अलंकारों से सुसज्जित मूर्तियां बनी हुई थी। देव, देवी व तीर्थंकरों की मूर्तियों का सौन्दर्य इतना मनमोहक था, कि इन खंडहरों के धूल-धूसरित मूर्तियों को जब हम आज देखते है, तो चकित से रह जाते हैं। मन में बारबार प्रश्न उठता है–इसके प्रतिष्ठाता कौन थे? समस्त पुरुलिया के पुरातात्विक इलाकों का भ्रमण करते हुए यह देखा गया है कि इन पुरा क्षेत्रों का लगभग अस्सी फीसदी भाग, जैन संस्कृति से जुड़ा हुआ है। इसलिए, पूर्व सम्भावना है, कि इन मंदिरों के प्रतिष्ठाता भी जैन ही होंगे, और वे मुख्यतः सराक है। ई.टी. डाल्टन के अनुसार, यही मानभूम के आदि आर्यवंशजात हैं—

"........and another held by the people who have left many monuments of their ingenuity and piety in the adjaining district of Manbhum and who were certainly the earliest Aryan setters in this part of India, the Saraks and fains"................

मिस्टर वैलेनटाईन वल के अनुसार सराक जाति के लोग बड़े पुराने जमाने से ही ताम्बे के काम काज के साथ जुड़े हुए थे। इन्हीं सराकों के प्रभाव से ही सिंहभूम धलभूमि (भूम) के इलाकों में ताम्रयुग का प्रादुर्भाव हुआ। बाद

में ताम्बे के खानों की मिलकियत को लेकर छोटा नागपुर के 'छो' जाति के साथ सराकों में विवाद उठ खड़ा हुआ। एशियाटिक सोसायटी ऑव बेंगल के प्रकाशन से भी पता चलता है कि सराक जाति के लोगों ने ही पहली बार ताम्बे के खानों को खोज निकाला था। ताम्बे के व्यवसाय या व्यापार के आधार पर ही, वे जीवन-बिताते थे।

".......the more adventurous Saraks or say Jains, having alone penetrated the jungles where they were rewarded with the discovery of copper, upon the working of which they must have spent all their time and energy, as with exceptions of tanks above mentioned, the mines furnish, the sole evidence of their occupation of that part of the country. It is scarcely conceivable, that the 'HOS,' when they drove out the Saraks, could have utterly destroyed all traces of building" (proceedings of Asiatic Society of Bengal, June 1869 pp. 170-174)

जैन साहित्य से यह जाना जाता है कि सराक सिर्फ ताम्बे के व्यापार से ही जुड़े नहीं थे, लोहे के काम से भी ये लोग जुड़े थे। अजय नदी के दोनों तरफ, रूपनारायणपुर से पांडवेश्वर तक जो विशाल लोहे का स्तम्भ और लोहा गलाने की चुल्ली थी–उसके साथ सराक जुड़े हुए थे। जैन साहित्य में सुधर्वा का नाम पाया जाता है। वे महावीर के शिष्य थे। उन्हीं को प्रथम लौहाचार्य (लोहे जैसे द्रव्य का ज्ञाता) माना जाता है। दूसरे लौहाचार्य भद्रबाहु हुए। डॉ. रमेशचन्द्र मजुमदार के अनुसार भद्रबाहु राढ़ के निवासी थे। इन्हीं के अथक प्रयासों से भारत के पूर्वी छोर में लौह शिल्प की शुरुआत हुई।

"This is the area where the ancient Sravakas who were clearly Jains, lived and practised the earliest known smelling of iron ore. Hinen Isang mentioned this area as the 'Safaprovince". The origin of the name of Safa is not known, but it appears to be clearly associated with Jainism. Hibert

had identified Dalmi as the capital of the Safa province and the entire Dalmi hills are full of Jaina antiquities. It is this province of Safa which if identified with a part of Radhdesa which was visited by Mahavira. (P.C. Roychoudhury. Jainism in Manbhum, Jain Journal).

कहे गए सराक सम्प्रदाय का आदि निवासस्थान कहाँ था, उसे लेकर काफी मतान्तर है। बहुतों का कहना है, उनका आदि निवास भारत का उत्तर पश्चिमांचल है। बाद में वे बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि पारसनाथ पहाड़ को केन्द्र में रखकर अपना जनजीवन निर्मित किये। इसी कारण लगभग सारा छोटानागपुर इलाके में वे व्यापार फैला चुके थे। उसी का विस्तार आज के पुरुलिया और मानभूम में देखा गया। मानभूम के कंसावती नदी (काँसाई) के तटवर्ती इलाकों को उन्होंने निवास स्थान के रूप में चुन लिया था। लगता है, इसीलिये कंसावती के तटवर्ती क्षेत्रों में ही ये पुरा-अवशेष अधिक पाए जाते हैं।

"This is borne out by the fact that from all among the banks of the kansai (kansabati) river, numerous stone mages of Jain Tirthankara have been found, which date to 10th, 11th or 12th century on stylistic consideratione. Besides these, there are remnants in the above places of Jain temples built between the 10th and 13th centuries in variation of the North Indian and Orissan and Nagar. Sikara style. These can be scen at Boram, Budhpur, Charrah, Falma, Pakbirrah.........." (West Bengal Dist. Gazetteeno, p. 139)

कंसावती और दामोदर नदियों के तटवर्ती पुरातात्विक क्षेत्र सराक जाति से सम्बन्धित है; इस पर जॉन डॉल्टन भी सहमत है—

"........the saraks appear to have coloniged along the banks of the rivers and we find their temple in ruins on the bank of Damodar, the Kansai is rich in architectural remains..........."

प्राचीन काल में काँसाई या कंसावती नदी को केन्द्र में रखकर जिसप्रकार एक व्यापारिक लेनदेन का मार्ग (Trade route) निर्मित हुआ था, उसके दो छोर थे। पहला बुधपुर से पाकबिड़रा के ऊपर से होते हुए बनारस से ताम्रलिप्त बन्दरगाह तक फैला हुआ था। दूसरा तेलकूपी से रघुनाथपुर, मेगुनपुर, दाशपुर, घाटाल होते हुए ताम्रलिप्त तक विस्तृत था। इन दोनों व्यापारिक मार्गों पर ताम्बे का व्यापार चलता था। हो सकता है, ताम्रलिप्त का नाम इसी ताम्बे के व्यापार के कारण पड़ा हो।

"An other route from Tamluk district to Banaras probably passed through Pakbirra and Bud'pur on the banks of the kausai near Manbazar,........... the fact that in those ancient times the merchants who are credited with having built these old temples." (W.B. Dist. Gazetteers, p. 235)

तो, यह कहा जा सकता है कि नवीं से तेरहवीं सदी के बीच जो मन्दिर बने थे वे अधिकांशतः जैन व्यापारी सराक जाति के लोगों की थी। बाद में व्यापार मंदा पड़ने पर देवालयों पर से उनका अधिकार कम होने लगा। हो सकता है, जैन व्यापारियों का एक बड़ा अंश मानभूम छोड़कर चला गया था। बस कुछ एक सम्प्रदाय टिके रह गये। यही वे लोग हैं, जो आज भी यहीं रहते है। उसी समय सराकों के देवालय हिन्दुओं द्वारा अधिगृहीत का लिए गये और देवालयों से जैनल को हटा दिया गया। जैन देव-देवियों की लगभग सभी मूर्तियों को हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियों में बदल दिया गया।

नवीं से तेरहवीं सदी के बाद जितने भी मंदिर बनाए गए, सारे पके हुए ईंटों से बने है और अधिकांश मंदिरों की प्रतिष्ठा मुस्लिम काल के बाद हुई। अधिकतर मंदिर (विष्णुपुर घराने के टेराकोटा पैनेल से सम्पृक्त है। मानभूम के सामंती शासकों का इन मंदिरों के निर्माण में काफी हाथ है। आज पुरुलिया में जो कुछ एक उल्लेखनीय टेराकोटा अलंकरण से सुसज्जित देवालय देखने को मिलते हैं, वे हैं— चेलियामार स्थित राधा-माधव मंदिर (१६९७), चाकलातोड़ गाँव में स्थित श्यामचाँद का जोड़ बंगला शैली में बना मंदिर (अठारहवीं सदी), बाघमुंडी राजमहल में स्थित राधामाधव मंदिर (१७३३), बराकजार में

आटचाला शैली में निर्मित ईटों का मंदिर (आनुः अठारहवीं सदी), रघुनाथपुर में रघुनाथजी का मंदिर (अठारह से उन्नीसवीं सदी), रघुनाथपुर के पास आचकोदा गाँव का टेराकोटा मंदिर (सत्रहवीं-अठारहवीं सदी), बेड़ो गाँव का टेरकोटा मंदिर (सत्ररहवीं सदी) नेतुड़िया के गड़पंचकोट का पंचरत्न मंदिर (सत्ररहवीं सदी) और गांपुर के आटचाला शैली में बना मंदिर विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

इस अध्याय में विशेष रूप से उन्हीं मूर्तियों और देवालयों की चर्चा यहाँ की गई है, जो विलुप्त होने के कगार पर खड़े हैं। आशा है कि आनेवाले दिनों में कोई सच्चा अन्वेषक और संस्कृतिप्रेमी इन सब मूर्तियों और देवालयों पर विस्तृत शोधकार्य के लिए आगे आएँगे और मानभूम के खोए ऐश्वर्य को फिर से उद्धार करने में समर्थ होंगे।

क्रमशः

श्रीचन्द्रराज चरित्र

कुमार ने पल्लिपति और भीलों को लक्ष्य करके कहना शुरू किया- आप लोग? कमसे कम आठम, चौदश, अमावस्या और पूर्णिमा इन चारों पर्वों में हिंसा आदि कतई न करें। शास्त्रों में कहा भी है- .

अट्ठमी चउदसी पुण्णिमाय, तह मावासा हबह पव्वं।
मासम्मि पव्व-छक्कं, तिन्निय पव्वाइ पक्खम्मि।।

चतुर्दश्यष्टमी चैवा-मावास्या चैव पूर्णिमा।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र! रवि संक्रान्ति रेवच।।
तैल-स्त्री-मांस भोगी स्यात् पर्वस्वेतेषु यः पुमान्।
विण्मुत्र-भोजनं नाम-प्रयाति नरकं मृतः।।

अर्थात्-आठम चौदस अमावस्या पूर्णिमा दूज पंचमी और एकादशी महीने में ये छह और पक्ष में तीन बड़े पर्व होते हैं। विष्णु पुराण में कहा है कि ऊपर बताये दिन और रवि संक्रान्ति का दिन ये पर्व माने जाते हैं। इन पर्वों में तैल स्त्री और मांस का भोग करने वाले टट्टी-पिसाब का भोजन करते हुए मर करके नरक में जाते हैं।

जीव की रक्षा करने में ही हमारी रक्षा है, हमारी भलाई है। सभी जीवित रहना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सभी शास्त्रों का एक ही उपदेश है। किसी जीव को मत सताओ। अगर सताओगे तो सताये जाओगे। कोई अपना सताया जाना पसंद नहीं करता, तो दूसरो को भी नहीं सताना चाहिये। अभयदान सब दानों से श्रेष्ठ-दान है। अहिंसा, इन्द्रिय-दमन-क्षमा, सचाई, ज्ञान, ध्यान और तप ये आठ बाते असली पुण्य है। इन्हीं से देवता भी प्रसन्न होते हैं।

महानुभावों! अभक्ष्य भक्षण करने से भी बड़ा भारी पाप होता है। मांस और शराब दोनों ही जीवन को गिरानेवाले हैं। शराबियों को कोई हिताहित का ज्ञान नहीं रहता। उनमें पवित्रता तो नाम मात्र को भी नहीं होती। उनकी स्त्रियां बाल-बच्चे दुःखी होते हैं। शराबी बेहोश होकर गिरता है। शराब से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

मज्जे महुम्मि मंसंमि-नवणीयम्मि चउत्थए।
उप्पज्जंति असंखाय-तव्वण्णा तत्थ जंतुणो।।

शराब में, शहद में, मांस में, और मक्खन, में असंख्या त्रस-चलते फिरते जीव उसी वर्ण के पैदा होते हैं। अतः दयालु पुरुषों को विवेक से काम करना चाहिये।

अस्तं गते दिवानाथे आपोरुधिर मुच्यते।
अन्नं मांस-समं प्रोक्तं मार्कण्डेय महर्षिणा।।

सूर्य-अस्त हो जाने पर पाणी पीना एक प्रकार से खून पीने जैसा होता है, और अन्न खाना मांस खाने जैसा ऐसा मार्कण्ड महर्षि ने बताया है।

आप लोगों से मेरा अंतिम कहना यही है, कि अगर आप लोग अपना भला चाहते हैं, तो चोरी, डकैती, जीव-हिंसा, मांस-भक्षण, मद्य-पान आदि का सर्वथा त्याग कर देना। अभी तो मुझे जाना है, वापस आऊंगा तब सारी दहेज-सामग्री को और आपकी कन्या को मैं ले जाऊंगा।

कुमार की हित की बातें सुनकर सभी लोग बड़े खुश हुए, और उस रोज से चोरी डकैती के नियम लेकर अपने आप को दुर्गति से बचाया, और धर्म के अधिकारी हो गये। कुमार श्रीचन्द्र मदनसुंदरी की खोज में एक दिन वहां से सुवेग रथ में निकल गये।

कल कल करती गिरि-नदी बह रही थी। नावों में लोग हवा खोरी का मजा लूट रहे थे। धोबी कपड़े धोने में और दूसरे लोग नहाने धोने में लगे हुए गंगा गोदावरी नर्मदा आदि का नाम लेकर अपनी ठंड भगा रहे थे। हमारा चरित नायक कुमार श्रीचन्द्र उस भीलपल्ली से पार होता हुआ नदी के किनारे हवा के साथ बातें करता हुआ शाम होते-होते कुण्डिन पुर जा पहुँचा।

नगर के बाहरी उपवन में विश्राम के लिये डेरा डाल दिया। पड़ोस में ही एक यक्ष का मंदिर था। उस में सोने की व्यवस्था की गई। कुमार प्रसन्नता से सो रहा था। कुछ समय के बाद कोई राजकुमारी सरस्वती अपनी सहेली सुनामिका और सुरुपिणी को साथ लिये विवाह की सामग्री लेकर वहां आ पहुंची। उन्होंने आवाज लगाकर कहा कि मंत्रीपुत्र श्रीदत्त! उठो ब्याह के लिये तैयार हो जाओ। वहां मंत्रीपुत्र तो कोई था नहीं श्रीचन्द्र ही था वह उठ बैठा और बिना चूंचपट किये चुपचाप ब्याह कर लिया। विवाह करके कुमार

जब सोने लगा तो उन कन्याओं ने कहा स्वामिन्! बाहर सांढनी खड़ी है, चलियें यहां से कहीं अन्यत्र चलें। इस पर कुमार ने कहा अभी रात्रि है। मैं चल नहीं सकता, न मुझे सांढनी पर बैठने का ही अभ्यास है। चुपचाप सो जाओ गड़बड़ मत करो।

उन कन्याओं ने आश्चर्य के साथ देखा कि अरे! यह तो कोई अजनबी आदमी से हमारा ब्याह हो गया। हमारा पूर्व संकेतित मंत्रि-पुत्र श्रीदत्त का तो यहां पता भी नहीं। उन्होंने पूछा अजी! आप कौन हैं? तब कुमार ने कहा मैं कुशस्थल से आया हूँ, तुम कौन हो? तुम यहां से अन्यत्र क्यों चलना चाहती हो? कुमार के ऐसा पूछने पर उनमें से एकने कहा—

हे आर्य! इस नगर के स्वामी राजा अरिमर्दन की ये राजकुमारी हैं। ये सदा यक्ष की पूजा करती हैं एक समय गोद में बैठी हुई राजकुमारी को देख राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा कि बताओ! इसके योग्य-वर कौन हो सकता है? इसी प्रसंग में किसी ने कहा—

कुशस्थल नरेश महाराज प्रतापसिंह के कुमार श्रीचंद्र जो परिस्थिति के वश एक सेठ के घर बड़े हुए हैं, वे बड़े त्यागी और अति योग्य हैं,। पर वे अभी अपने पालक पिता सेठ लक्ष्मीदत्त से नाराज होकर विदेश-यात्रा कर रहे हैं। अगर वे राज कुमारी के पति हों तो सोने में सुगंध हो जाय। यह सुन राजा तो चुप हो गये। पर राजकन्या सरस्वतीजी इसी उधेड़ बुन में अपने इष्ट यक्ष की मनौती करने लगीं। एक समय रात्रि में यक्ष ने, कहा, राजकुमारी! आज से पांचवें दिन में अपने मंदिर में रात्रि के समय लग्न बेलामें तुम्हारे पति को ले आऊंगा।

सुबह होने पर अपने स्वप्न को राजकुमारी ने बड़ी प्रसन्नता से हमें कह सुनाया। स्वप्न की बात जानकर हमने जो कुछ किया इसको भी आप सुनिये—

इसी नगरी में श्री दत्त नामका एक मंत्री पुत्र रहता है। उसने राजकुमारी के रूप-गुणों से आकृष्ट होकर इनकी प्राप्ति के लिये कई उपाय किये। किन्तु राजकुमारी तनिक भी उसे नहीं चाहती थी। उसने मुझे लोभ दे दिया, मैं उसके फंदे में फंस गई। मैंने राजकुमारी का स्वप्न उससे कह दिया। उसने मुझे बताया कि तुम जाकर राजकुमारी को यह कह दो कि मंत्री कुमार

श्रीदत्त को भी ऐसा ही स्वप्न आया है। मैने वैसा ही किया और राजकुमारी को जाकर झूठमूठ ही निवेदन किया कि आज रात्रि में श्रीदत्त ने भी ऐसा ही स्वप्न देखा है।

राजकुमारी ने कहा, यदि ऐसा है तो यक्ष के वचन मुझे मान्य हैं। यह कह कर राजकुमारी चुप हो गई और उसने सखियों को सारी विवाह-सामग्री तैयार करने की आज्ञा दे दी। मैंने मंत्री-पुत्र को भी सारा कार्यक्रम सूचित कर दिया। पर न जाने वह क्यों नहीं आया। देवताओं के वचन भी तो महिमावाले होते हैं न?

अब राजकुमारी कहने लगी देव! मैं भी तो देव द्वारा ठगी गई हूँ। मेरे भाग्य से ही यक्ष-द्वारा आप मुझे मिले हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि हम दोनों का यहां अधिक ठहरना खतरनाक होगा। न जाने पिताजी क्या कर बैठें?

श्रीचन्द्र ने कहा प्रिये घबड़ाओ नहीं। वे भी मनुष्य हैं और मैं भी मनुष्य ही हूँ। देखलूंगा वे कितने पानी में हैं। रात तो राजकुमारी की दुविधा में ही बीती। प्रातः काल में जब स्पष्ट रूप से कुमार के दर्शन हुए तब वह बड़ी ही प्रसन्न हुई।

यक्ष-मंदिर के पुजारी ने राजा से सारी घटना कह सुनाई। उसने क्रोधावेश में अपने सेनापति और सिपाहियों को भेज दिया। कुमारी थर-थर कांपने लगी। कुमार ने कहा-प्रिये! डरो मत। ये बेचारे अभी भागते हैं। कुमार ने कहा और एक सिंह-गर्जना की, गीदड़ के समान सारे सिपाही भाग खड़े हुए। राजा को पता चला, तब वह अधिक क्रोध में आकर पूरी ताकत के साथ आया। कुमार ने सखियों सहित पत्नी को अंगूठी की नाम मुद्रा दिखा दी। उनके कान में कुछ कह कर-सारी वस्तुएं एक गठरी में बांध कर अंजन-योग से उसे बंदरिया बना दिया। सामने आनेवाले सिपाहियों को दायें बांये हाथ के धक्के से गिरा कर राजा के हाथी पर शेर के जैसे दहाड़ता हुआ चढ़ गया, और राजा की तलवार छीनकर उसे बांध वहीं छोड़ दिया।

इतने में किसी ने कुमार को पहचान कर ये गाथाएं गाईं—

कुण्डल पुरस्स रज्जं, चंदमुही राय कन्न-परिणयणं।
जक्ख विहिणा उ विहियं, चंदउरं वासिय जेण।।
सो कुण्डल पुर सामी, सिरिचंदो जयउ पयावसिंह कुलचंदो।
संफुसइ जस्स तइया, जक्खो भत्तीइ पायतले।।

अर्थात्—कुण्डलपुर के राज्य को और विवाह के द्वारा चन्द्रमुखी नाम की राज-कन्या को पानेवाले, यक्ष के आदेश से नया चन्द्रपुर बसानेवाले, यक्ष द्वारा अपने पैर सहलाने वाले कुण्डलपुर के स्वामी और महाराजा प्रताप सिंह के कुल में चन्द्रमा के जैसे कुमार श्रीचन्द्र की जय हो।

इन गाथाओं को सुनकर श्रीचन्द्रराज ने उस चारण को पर्याप्त धन देकर संतुष्ट किया। बाद में वनमें जाकर अपने रथ पर सवार हो कुमार वहां से नौ दो ग्यारह हो गये।

इधर मंत्रियों ने मिलकर राजा अरिमर्दन के बंधन काटे, और मन्दिर के चबूतरे पर उन्हें ला बिठाया। श्रीचन्द्र से वांछित धन को पानेवाला वह चारण भी वहां आ पहुँचा। उसने राजा से श्रीचन्द्र की महती महिमा श्रीचन्द्र-प्रबन्ध के रूप में गा सुनाई। भट्ट द्वारा मुझे बांधने वाला पुरुष श्रीचन्द्रराज ही था यह जानकर राजा बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने अपने सिपाहियों को श्रीचन्द्र राज को लेने के लिये भेजे पर उसे वे न पा सके, और योंही निराश होकर वापस लौट आये।

राजा मंदिर में अपनी कन्या सरस्वती के पास गया, वहां वह बंदरी के रूप में आसूँ भरे खड़ी थी। उसे देख कर राजा बड़े ही दुखी हुए। जब सखियों ने सारा रहस्य समझाया तो उन्हें कुछ धीरज हुआ, और वे कुमार की कला को सराहने लगे। अपनी पुत्री से उसने कहा बेटा! महाराजाधिराज प्रतापसिंह के परम प्रतापी पुत्र श्रीचन्द्र ने तुझे ब्याहा है। तू बड़ी भाग्यशालिनी है। मैं तुझे हाथी घोड़े आदि दहेज की उत्तम सामग्री के साथ कुशस्थलपुर पहुँचाऊंगा। तू जरा भी चिंता मत कर। राजा ने उस भट्ट को खूब दान दिया। एवं अपनी उस वानरी कुमारी सरस्वती को अपने महल में ले गया। सारे शहर में प्रसन्नता छा गई।

पुण्यवान जहँ पद धरे-प्रकटे नवे निधान।
सुख दुख इस संसार में—पुण्य पाप फल जान।।

वीर पुरुष जब तक अपने आश्रित को सुखी नहीं बना लेते, वहां तक वे खुद सुख से नहीं बैठते हैं। यही हालत चरितनायक कुमार श्रीचन्द्रराज की थी। मदनमंजरी कहां गई? वह सुखी है या दुःखी? इन प्रश्नों का सही उत्तर नहीं मिल जाता, तब तक उनके लिये कहीं शांति से बैठ जाना असंभव था। राजा अरिमर्दन को छोड़कर वे मदनमंजरी की खोज में पहाड़ों में, बीहड़ वनों में नगरों में घूमते ही जाते थे।

शुभ-शकुनों द्वारा प्रेरित हुएं वे एक रोज एक बगीचे में रात्रि बिताने के ख्याल से टिके हुए थे। इसी बीच में उन्हें थोड़ी दूर से बड़ी ही मधुर मुरज-ध्वनि सुनाई दी। अपने सारथि कुंजर को सावधान करके वे उस ध्वनि को लक्ष्य करके चले। एक छोटी सी पहाड़ी पर किसी यक्ष के मंदिर में द्वार बंद करके कुछ स्त्रियां श्रीचन्द्र के गीत गा रही थीं। उनकी उत्कण्ठा और भी बढ़ गयी। किवाड़ के छेद से अंदर की गति विधि को देखा तो वहां आठ सुंदर कन्याओं के साथ मदन मंजरी नाच गान कर रही थी। उसे देख कुमार को भारी प्रसन्नता हुई। गुप्त रूप से सारे कार्य कलाप को देखना, उसने तय किया सारी रात भर उन कुमारियों को मदन सुंदरी ने श्री चन्द्र-प्रबंध को नाच-गान के साथ समझाया।

रात बीत गई। मदन सुंदरी उन कुमारियों के साथ यक्ष–मंदिर से निकल पड़ीं। यह देखकर कुमार का हृदय खुशी के मारे उछल पड़ा। वे एकदम मन ही मन में बोल उठे ओहो! आज मेरा बड़ा भारी सौभाग्य है, कि मेरी स्त्री मुझे मिल गई।

कौतुक देखने के इच्छुक कुमार अब भी प्रकट होना नहीं चाहते थे। अतः वे उस गुटिका के योग से अदृश्य रूप से उनके पीछे पीछे हो लिये। तब वे एक पहाड़ की गुफा में घुसीं और एक बारी में से होकर पाताल नगर में जा पहुँची सारा नगर मणि-प्रदीपों की कान्ति से जगमगा रहा था मदन अपनी सहेलियों समेत अपने महल में चली गई, और वहां पर रत्न-जटित पलंग पर बैठ कर अपनी मुख्य सखी से बोली, सखी! आज मेरा बाँया नेत्र बार बार फड़क रहा है इससे मैं यह मानती हूँ, कि या तो मेरे पति स्वयं ही आज यहाँ आ जायेंगे या उनका संदेश मुझे जरूर मिल जायगा।

यह सुन रत्नचूला ने कहा, सखी! मेरी भी आज ऐसी ही मान्यता है कारण कि जिस दिन से तुम यहाँ आई हो, उसी दिन से आंबिल और उपवास आदि से खूब तपस्या कर रही हो अतः वह तपस्या के प्रभाव से यहाँ जरूर मिलेंगे।

इसी वार्तालाप के बीच में किसी दासी ने आकर रत्नचूला से कहा कि चलिये आपकी माता जी भोजन के लिये बुला रही हैं। यह सुन मदना ने उन सब से कहा कि बहनों! तुम सब जाओ, और भोजन करो। भूख न

होने के कारण आज मैं भोजन नहीं करूँगी। परन्तु वे सब वहाँ से टस से मस न हुई, और बोली, बहन! हम तुम्हारे बिना अकेली भोजन नहीं करेगी। इस वाद विवाद में काफी देर हो जाने के कारण माता जी स्वयं उन्हें बुलाने के लिये वहां आ पहुँची। उन्होंने मदना से कहा कि मदने! आज तुम भोज क्यों नहीं कर रही हो? यह सुन मदना ने उत्तर दिया माताजी! आज न मालुम मुझे क्या हो गया है, कि मेरी तबियत किसी भी काम में नहीं लगती।

विद्याधरी ने कहा, पुत्री! तनिक भी विचलित मत हो। जो तुम्हारा पति है उसी को मेरी इन पुत्रियों ने भी अपना पति स्वीकार किया है। धीरज धरो बेटी! निमित्तिक का वचन कभी झूठा नहीं हो सकता। मैं बड़ी ही अभागिनी हूं। मेरे दुःख अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुके है। मेरे स्थान आदि भी मेरे हाथों से निकल चुके हैं, और मेरा पति भी बन में मृत्यु को प्राप्त हो चुका है। मेरा देवर अपने पुत्र समेत सुमेरू पहाड़ पर बहुत पहले से ही जा बैठा है। कुशस्थल को भेजे हुए दूत भी अभी तक कोई खबर लेकर वापिस नहीं लौटे हैं। पुत्री! क्या करूँ मैं सब ओर से निराधार हूँ। तुम स्वयं बुद्धिमती हो सभी बातों को जानती हो। अतः जानते हुए इस प्रकार हठ करना तुम्हें शोभा नहीं देता उठो। भोजन करो। हमारे इस कार्य में तुम अंतराय मत बनो। इतना समझाने पर भी जब मदना भोजन करने के लिये तैयार नहीं हुई तब वह विद्याधरी उसे अपनी छाती से लगा कर उसके दुःख से दुःखी हो फूट फूट कर रोने लगी।

कुमार अदृश्य रूप से वहां खड़ा ये सारी घटनाएँ देख रहा था। विद्याधरी की बातें सुनकर उसको ध्यान हो आया कि बन में मुझ से जो विद्याधर मारा गया था यह उसी की पत्नी है। मुझ में अत्यन्त स्नेहवती है। इसके दिल में मेरे लिये लेशमात्र भी वैर प्रतीत नहीं होता है। ऐसा विचार कर कुमार उस नगर द्वार पर प्रकट होकर बैठ गये। उन्होंने द्वारपाल से कहा कि तुम अन्दर जाकर सूचित करो कि कोई व्यक्ति आप लोगों से मिलना चाहता है। द्वारपाल ने भीतर जाकर सूचना दी, और सूचना पाकर मणिवेगा वहां पर आ उपस्थित हुई। उसने रूप रंग और आकार से सुन्दर उस पुरुष से पूछा, आप कौन हैं और आप कहां से आये हैं?

श्रीचन्द्र जबाब देने ही वाला था कि इतने में मदन सुन्दरी भी सखियां समेत वहाँ आ पहुँची। वहाँ अपने पति को देखकर वह बड़ी प्रसन्न हुई। मारे

प्रसन्नता के उसे रोमांच हो आया और कंठ गदगद हो गया। आँखों में हर्ष के आँसू छलछला आये। रूँधे हुए स्वर से उसने विद्याधरी से कहा, माताजी! आज आपके द्वार पर खड़े हैं।

इस शुभ समाचार को सुनते ही विद्याधरी दौड़ी आई और कुमार को महल में ले जाकर उसका गुणगान करने लगी महाराज-प्रतापसिंह के सुपुत्र श्रीचन्द्र! आप हम लोगों के अहो—भाग्य से ही यहां आये हैं। यह आपकी प्यारी मदना रात दिन आपके वियोग में रोती हुई आपके मिलन की आशा का आधार पाकर ही आज तक जीवित बची है। आपके प्रेम और गुणों को स्मरण करके आपके विछोह में इस बाला ने अपने नेत्रों को सावन-भादों के बादल ही बना डाले हैं। आप दोनों का पारम्परित प्रेम अत्यन्त सराहनीय है।

इधर उस विद्याधरी के आदेश से वे आठों कन्याएँ हाथों में वरमालाएँ लेकर कुमार के गले में पहनाने के लिये वहाँ आ उपस्थित हुई। यह देख कुमार श्रीचन्द्र ने उस विद्याधरी से कहा आपकी ऐसी स्थिति क्यों है? और ये कुमारिकाएँ कौन हैं?

कुमार के प्रश्न का उत्तर देती हुई विद्याधरी ने कहना शुरू किया, वीरों से मुकुटमणि कुमार! सुनो। मैं आपको अपना सारा वृत्तान्त सुनाती हूँ।

इसी बैताढ्य नामक पहाड़ पर मणिभूषण नामका नगर है। वहाँ पर पहले रत्नचूड़ नामके राजा राज्य करते थे। उनके छोटे भाई मणिचूड़ वहाँ के युवराज पद को सुशोभित करते थे। रत्नवेगा और महावेगा हम दोनों उनकी स्त्रियां हैं। ये रत्नचूला, मणिचीला आदि उनकी पुत्रियां हैं। रत्नकांता आदि ये चार उनकी भानजी हैं, रत्नचूड़ और मणिचूड़ इन दोनों को अपने गोत्री विद्याधरों के साथ आकाश में घूमते हुए उत्तर-श्रेणी के स्वामी सुग्रीव विद्याधर ने जीत लिया। वे दोनों अपने समस्त धनमाल व परिवार समेत उस नगर को छोड़कर यहाँ चले आये, और यहां पाताल नगर बसा कर रहने लगे।

एक समय पुनः राज्य प्राप्ति के लिये मेरे पति रत्नचूड़ विद्याधर चन्द्रहास तलवार को पाकर उसकी प्रयोग सिद्धि के लिये वन में गये वहाँ पर विधि के अनुसार नीचा मुंह किये उस विद्या को ज्योंही साधने लगे त्योंही किसी ने उन्हें मार दिया।

जब प्रातःकाल हम पूजा की सामग्री लेकर वहाँ पहुँची तो वे मरे पाये। उसी जगह उनकी प्रेत-क्रिया करके हम अपने स्थान पर लौट आई।

एक समय रत्नचूड़ का पुत्र और रत्नचूड़ा का भाई रत्नध्वज पिता की मृत्यु से दुःखी होकर इधर उधर भटकता हुआ एक बड़ी भारी अटवी को प्राप्त हुआ वन में किसी स्थान में प्रकाश का भ्रम पैदाकर, इस मदनसुन्दरी को अपने पति से पृथक करके यहाँ ले आया। इसके शील के प्रभाव से एवं हमारी धाक से वह इसके साथ कोई अत्याचार नहीं कर सका। उस दिन से मैंने इस सदाचारणी सुशीला मदना को अपनी धर्म-पुत्री बनाकर रक्खा है। यह इन सभी कन्याओं को अपने पति के गुणों और चरित्र का ज्ञान कराती है। मदना द्वारा कहे हुए आपके गुणों को व परोपकार युक्त कार्यो को सुनकर ये आप की हो चुकी हैं, और साथ में मदना को भी ये कह चुकी हैं, कि जो आपके पति हैं वे हमारे भी पति होंगे।

एक समय मणिचूड़ ने किसी नैमित्तिक से पूछा कि भाई! कृपाकर यह तो बताओ कि हमारा खोया हुआ राज्य कब मिलेगा? उसने उत्तर देते हुए कह, महाभाग! तुम्हारी आठों कन्याओं द्वारा वरण किया हुआ वर ही तुम्हारे खोये हुए राज्य को जीत कर लौटा लावेगा। ऐसे महापुरुष का संयोग अप्रतिचक्रा विद्या की साधना से ही हो सकेगा। उसके कथनानुसार मणिचूड़ और रत्नध्वज दोनों छः महिने में सिद्ध होने वाली उस विद्या को विधि पूर्वक साधने के लिये मेरू पहाड़ पर गये हुए है।

साधना करते करते उन्हें चार महीने बीत गए हैं। अब केवल दो महीने साधना - क्रम के बाकी हैं। हम लोगों के अहो भाग्य से ही आप यहां आए हैं। अतः कृपा कर इन कन्याओं को स्वीकार कीजिये। प्रेम पूर्वक कुमार की मौन स्वीकृत से विद्याधर-बालाओं ने उनके गले में वर मालायें पहना दीं। उनके साथ श्रीचन्द्र ने भोज किया। बातचीत के प्रसंग में सासुओं ने उससे अकेले ही आने का कारण पूछा। तब उसने अपना कुछ कुछ हाल ठीक तौर से उन्हें कह सुनाया। यह सुन रत्नवेगा ने कहा, कृपाकर जब तक मणिचूड़ वापिस यहाँ लोटकर न आवें तब तक आप सुख पूर्वक यहीं रहें।

श्रीचन्द्र ने अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहा, माता जी मुझे काम बहुत हैं, अतः मैं इतने दिन-तक यहाँ ठहर नहीं सकता। मैं यहाँ से शीघ्र ही कनकपुर जाना चाहता हूँ। जब मणिचूड़ अपनी विद्या-सिद्धि करके दो महीने बाद लौट आवें तब आप मुझे कुशस्थल आदि मेरे शहरों में जहाँ कहीं होऊं

वहाँ सूचना भेज देवें। बाद में सब कुछ ठीक होगा। आप लोगों के साथ मेरा जो सम्बन्ध हुआ है, इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ।

विद्याधारियों ने कहा कुण्डलपुर-नरेश! हम अनुनय विनय करके आपको रोक कर आप के कार्य में कोई बाधा पैदा करना नहीं चाहती है। केवल एक ही प्रार्थना है, कि इन कन्याओं का पाणि-प्रहण करके इनको साथ ले पधारें। ताकि मदन सुन्दरी के साथ इनका जो प्रेम है उसमें वियोग का कष्ट इन्हें न हो।

श्रीचन्द्र ने उत्तर दिया माताजी! आप क्यों इतना विचार करती हैं? विवाह तो जब चाहेंगे तभी हो जायेगा। जब आप लोगों को पुनः राज्य की प्राप्ति होगी तभी मैं इनसे ब्याह करूंगा। किसी प्रकार समझा बुझाकर उनकी अनुमति से वह मदना को साथ लेकर वहां से रवाना हुआ, तब रत्नचूड़ा रो पड़ी। उसने रुंधे हुए स्वर में कहा—स्वामिन् इधर आप पधारने का विचार करके हमारे लिये दुस्सह विरह की आग भड़का ही रहे हैं, पर इन हमारी बड़ी बहिन मदन सुन्दरी जी को आप क्यों लिये जाते हैं? हमारी हालत पर भी तो जरा ग़ौर कीजिए। हम यहां इस वियोगी दशा में कैसे जीयेंगी? उसकी प्रार्थना पर कुमार का हृदय पिघल गया। उसने मदन सुन्दरी से कहा–ये ऐसा कहती हैं तो रह जाओ। मदना ने कहा इतो व्याघ्र इतस्तटी- न्याय उपस्थित हुआ है। स्वामिन्! दैव योग से बिछुड़े हुए आपका मिलाप बड़ी मुश्किल से हुआ है। हालां कि इन बहिनों को छोड़ते हुए भी मुझे कष्ट होता है, पर आपको तो कतई नहीं छोड़ सकती। मैं तो आपके साथ ही चलूंगी।

श्रीचन्द्रराज ने उन विद्याधर—कन्याओं को मैं निश्चित अवधि में लौट आऊंगा—की प्रतिज्ञा करके आश्वासन दिया। और उन्हें वहीं रहने को विवश किया। उन्हें देने योग्य वस्तुएं देकर सन्तुष्ट किया, और मदना को लेकर वहां से चल दिये। जहां रथ खड़ा किया था, वहां पहुंचकर कुमार रथ में बैठकर कनकपुर की ओर चल दिये आपस में विरह की अवधि में बीती हुई अपनी घटनाओं को सुनाते हुए वे दोनों मार्ग में चले जा रहे थे। जाते जाते रुद्रपल्ली नामक नगरी के समीप पहुंचे।

नगर के बाहर विशाल जन समुदाय इकट्ठा हो रहा था। क्या बात है? यह जानने के लिये कुमार उधर की तरफ आगे बढ़े। उनने देखा एक चिता

बनी हुई है। एक कृश काय कन्या उसके पास खड़ी है। राजा आदि उसे समझा रहे हैं बेटी! अग्नि प्रवेश मत करो। जीवित नर कल्याण को प्राप्त करता है। मर कर अन्धकार के गहरे गर्त में चला जाता है। दूसरी ओर शहर कोतवाल द्वारा गिरफ्तार किया हुआ व्यक्ति रस्सियों से बंधा हुआ खड़ा है।

कुमार रथ से उतर पड़े। पास खड़े प्रधान से उसने पूछा भाई क्या बात है? उसने कहा महाभाग! इस नगरी का नाम रूद्रपल्ली है। ये सामने खड़े हैं वे यहां के नरेश हैं। पास ही उनकी महारानी क्षेमवती खड़ी है यह उन्हीं की राजकन्या दुर्बल और दुःखी हंसावली है। इसके आगे वह कुछ कह ही रहा था कि राजा की दृष्टि रथ पर पड़ी। इतना सुन्दर रथ, और ऐसे प्रभावशाली कुमार को देखकर राजा को बड़ा भारी विस्मय हुआ। उसने मन्त्रियों को एवं प्रतिष्ठित नागरिकों को कुमार के पास भेजा। वे सब कुमार के पास पहुँचते हैं इतने में वहां आये हुए हरि बारहट के भाई अंगद भट्ट की दृष्टि कुमार पर पड़ी। वह बोल उठा—

कण्ग ज्झयस्स रज्जं, पुत्तिं कणगाउलीं च कणगउरे।
बिलसइ सुरदिन्नं जो, नव लक्खवईस सिरिचंदो।।
सिरिपव्वयग्गसिहरे, चंदप्पह-जिणस्स चेइयं जेण।
कारवियं चउदारं, रम्मं सो जयउ सिरिचंदो।।

अर्थात्—देवताओं से दिये हुए कनकध्वज के राज्य कनकपुर के और उसकी पुत्री कानकावली के जो स्वामी हुए है उन नवलक्षाधिपति श्रीचन्द्र कुमार की जय हो। जिनने श्रीपर्वत के अग्रिम शिखर पर श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का विशाल चतुर्मुख मन्दिर बनाया उन श्रीचन्द्र कुमार की जय हो। ये कुमार ही श्रीचन्द्रराज हैं ऐसा जानकर पास में खड़े मन्त्री आदिकों ने राजा के पास पहुँचकर निवेदन किया कि महाराज! श्री चन्द्रकुमार यहीं आये हुए हैं। इतना सुनते ही राजा वज्रसिंह अपनी कन्या हंसावली को साथ लेकर वहां आ पहुँचे। परस्पर में शिष्टाचार—स्वागत सत्कार के बाद कुमार ने पूछा कन्या को क्या दुःख है? वज्रसिंह ने कहा—महाराज यह मेरी पुत्री हंसावली कनक नरेश की पुत्री कनकावली की सखी है। कनकपुर और कनकावली के आप स्वामी हो गये हैं। यह जानकर इसने भी निश्चय किया कि कनकावली के पति ही मेरे पति होंगे।

इस दृढ़-निश्चय को जानकर मैंने विश्रुत नामके अपने मन्त्री को आपकी सेवा में कनकपुर भेजा था। वहां लक्ष्मण मन्त्रि-द्वारा आप अनिश्चित काल के लिये अनिश्चित विदेश यात्रा में पधारे हुए हैं। विश्रुत मन्त्री से ऐसा जानकर यह कन्या अन्दर ही अन्दर दुःख पाती हुई आपके स्मरण में जीवन व्यतीत कर रही है।

इधर कुण्डिनपुर के नरेश अरिमर्दन का पुत्र चन्द्रसेन हंसावली से विवाह करना चाहता था, इसी से चन्द्रावली की प्रतिज्ञा और आपका विदेश गमन जानकर उसके मन में कुमति पैदा हुई। उसने सारी स्थिति का अध्ययन किया। इसके बाद वह एक मनुष्य को साथ लेकर यहाँ आया। उसने अपना नाम श्रीचंद्र रखा। उसके छल कपट का हम लोगों को कोई पता न चला। हम और कन्या उसको सचमुच श्रीचन्द्र समझ कर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उसने कपट जाल बिछा दिया। एक समय कनकपुर का व्यापारी हमारे यहां आया। उसने राजकुमार को पहिचान लिया। यह जानकर हम बड़े दुःखी हुए कि श्रीचन्द्र के बदले में चन्द्रसेन ने हमें धोखा दिया है, हमारी पुत्री के दुख का तो क्या पूछना? मन्त्री चिंतित हो उठे। विवाह विष हो गया।

कुमारी हंसावली प्रायश्चित के लिये अग्नि में जलने को तैयार हुई। हमने बहुत रोका पर यह अपने आग्रह पर डटी रही। हमें अपनी अज्ञानता पर पश्चात्ताप हो रहा है। चन्द्रसेन की क्रूरता, नृशंसता और अदूरदर्शिता पर क्रोध आ रहा है। उस अपराधी को भी हम यहां चोर की तरह बांध कर लाए हैं।

इस बात को सुनकर सान्त्वना देते हुए कुमार ने कहा—राजन्! आपका या राजकुमारी का इसमें कोई दोष नहीं है।

सा सा सम्पद्यते बुद्धिः-सा मतिः सा च भावना।
सहायास्तादृशा ज्ञेया, यादृशी भवितव्यता।।

अर्थात्— जैसी होनी होती है, मनुष्य में वैसी ही बुद्धि मति और भावना उत्पन्न हो जाती है। वैसी ही उसे सहायता भी प्राप्त हो जाती है।

जो भावी संसार में, होती अपने हाथ।
राम न जाते हरिण संग सीय न रावण हाथ।।

अतः हे राजन्! इसके लिये आप जरा भी दुःखी न होइए, चन्द्रसेन के बंधन कटवा कर उसे यहां बुलाइये। राजा ने ऐसा ही किया। उसके आने पर

श्री चन्द्र ने कहा-अरे श्रेष्ठ राजकुल में जन्म लेकर भी तूने यह नीच कुकर्म क्यों किया? वह लज्जावनत होकर बैठा रहा।

श्रीचन्द्र ने हंसावली से भी कहा–भद्रे! इतनी दुखी क्यों हो रही हो। आवेश में आकर बिना सोचे समझे जल मरने का अकार्य मत करो। दुर्लभ मानव-भव बार-बार नहीं मिलने का। आत्महत्या एक घोर पाप है। उसे करके अपने आप को क्यों कलंकित करती हो। चाहे मन से और वचन से वरण न किया हो पर पाणि–ग्रहण कर लेने पर वह निश्चित रूप से पति हो ही जाता है।

सिंह-गमन सुपुरुष-वचन, कदली फले इकबार।
तिरिया तेल हमीर-हठ, चढ़े न दूजी बार।।

सज्जनों का वचन और स्त्रियों का ब्याह एक बार ही होता है।

हंसावली ने कहा—महापुरुष! जो आप फरमाते हैं वह सच है। फिर भी आप सती स्त्रियों के कुल धर्म पर दृष्टि डालिए। स्त्री मन से जिसको अपना पति स्वीकार करलेती है वही उसका पति हो सकता है, दूसरा नहीं। मैंने आपके भ्रम में उसका हाथ पकड़ा था, लेकिन अब भ्रम के न रहने पर मैं उसे क्यों मानूं मैं दृढ़ता से उसका त्याग करती हूँ शास्त्रों में कहा भी गया है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः।
तथैवालिङ्ग्यते भार्या-तथैवलिङग्यते स्वसा।।

अर्थात्— मन ही मनुष्यों के बंध और मोक्ष का कारण है जिस प्रकार स्त्री का आलिंगन किया जाता है वैसे ही बहन का भी किया जाता है, परन्तु मन बहन को बहन की दृष्टि से स्त्री को स्त्री की दृष्टि से जुदा कर देता है। मन से किया हुआ काम ही सब ठीक और शास्त्रीय माना जाना चाहिए। अतः मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि मेरे बिना मन से किये हुए कामों को व्यर्थ मानकर बिना किसी हिचकिचाहट के आप मुझे स्वीकार कर लें।

राजकन्या हंसावली के चतुराई भरे वचनों को सुनकर श्रीचन्द्रने कहा-राजकुमारी! वास्तव में तुम सदाचारिणी हो। कांच और मणि का परिवर्तन निश्चय ही हो सकता है, परन्तु विवाहित स्त्री का विनिमय नहीं हो सकता। बुद्धि के भ्रम से दूध में डाला हुआ नमक क्या बदल सकता है? कभी नहीं। ठीक उसी प्रकार भ्रम से किया हुआ विवाह, विवाह ही रहता है।

भ्रम से विवाहित पति पत्नी, पति पत्नी ही रहते है। वैसी स्त्री को मैं पर स्त्री ही मानता हूँ, और पर स्त्री अपनाने से घोर पाप लगता है।

हंसावली ने कहा देव! यदि आप मुझे पराई स्त्री ही समझते हैं, तो आग में जल मरने के सिवाय मेरे लिये दूसरा क्या मार्ग हो सकता है? मैंने तो मन वचन से आपको ही अपना पति माना है, और मानती हूँ। छल-कपट से बने हुए पुरुष को पता लग जाने के बाद पति मानना मेरे लिये एक घोर अपराध है। मैं ऐसे पुरुष को पर पुरुष मानती हूँ और पर पुरुष से संबंध करना क्या घोर पाप नहीं है?

वज्रलेप से समान राजकुमारी के ऐसे अमिट निश्चय को जानकर राजा श्रीचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए। सबके सामने उन्होंने कुमारी की शील-दृढ़ता को सराहा। दण्डनीय और निरोध करने योग्य उस अपराधी चन्द्रसेन को दया करके राजा से छुटकारा दिलवा दिया। वे कहने लगे–

राजन्! संसार की स्थिति ही ऐसी है। सभी प्राणी विषयों द्वारा सताये जाते हैं। वासना ही सब दुःखों की जड़ है। मन में जरासी शिथिलता आने पर वासना बढ़ती ही जाती है, और मनुष्य को अपने स्थान से गिरा देती है। मदिरा मनुष्य को उन्मत्त बनाती है पर वासना में उससे अनंत गुणी मादक शक्ति होती है। मदिरा एक जन्म तक ही काम करती है, और वासना अनंत जन्म तक पीछा नहीं छोड़ती। वासना को सर्वथा जीतने वाले पुरुष जिन भगवान् कहलाते है और वासना को जीतने का अभ्यास करने वाला जैन होता है। अनंते जन्म-जन्मान्तर होने पर भी सच्चे जैनत्व के अभाव में हम संसार के दुःखों से मुक्त नहीं हुए हैं। सर्वथा वासना को जीतने वाले और वासना को जीतने का अभ्यास करने वाले महापुरुष सदा वंदनीय होते हैं। वह दिन धन्य, परम धन्य होगा जब कि हम वासनाओं पर काबू कर लेंगे।

इस प्रकार जीवन को उन्नत बनाने वाले श्रीचन्द्र राज के प्रवचन को सुनकर राजा, मंत्री, राजकन्या, आदि सभी लोग बड़े प्रसन्न हुए। चन्द्रसेन कुमार–श्रीचन्द्र के चरणों में गिरकर कहने लगा–स्वामिन्! आपने मेरे प्राणों की तो रक्षा की ही है पर इससे भी बढ़कर वासना विजय-विवेक को समझाकर आपने मेरा परम उपकार भी किया है। आज से मुझे आप अपना एक छोटा सा सेवक समझें।

इधर कुमारी हंसावली के ज्ञान-चक्षु भी खुल गये। उसके मनोभावों में सहसा परिवर्तन हो गया। उसका मुख-मण्डल ज्ञान की ज्योति से चमक उठा। वह हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से कहने लगी–देव! पहिले तो आपने सौंदर्य, शौर्य, औदार्य आदि गुणों से मेरा मन हर लिया था, और आज इस प्रकार का अद्भुत ज्ञान सुनाकर, आपने मेरी रक्षा की है। आज से मैं आपको अपना धर्म-गुरु मानती हूँ। अब मैं वासनाओं पर मरने वाली नहीं हूँ प्रत्युत वासनाओं का विजय करूंगी। आपकी दया से आज मैंने जैन धर्म के सच्चे स्वरूप को समझ पाया है। आज से पूर्ण वीतरागी-श्रीजिन भगवान् को–देव, वीतराग भावमें रमण करने वाले को गुरु, और उन्हीं के बताये विधि विधानों को-धर्म रूप मानूंगी छल कपट से हुए विवाह के बंधन को काटकर मैं अब जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारिणी रहूँगी। शील ही मेरे जीवन का आदर्श रहेगा।

राजा श्रीचन्द्र ने कहा देवी! तुम धन्य हो। तुम्हारे जैसी सती माताओं के कारण ही हमारा मस्तक गौरव से ऊंचा है। हमारा देश आर्य देश कहलाता है। तुम्हारे त्याग और तप की बराबरी कौन कर सकता है? इस त्याग और तप को मैं वंदन करता हूँ।

राजा बज्रसिंह और उनका परिवार राज कन्या हंसावली की वीर-प्रतिज्ञा को सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। सारा वायु मण्डल ही आनन्दमय हो गया। राजा वज्रसिंह ने बड़े भारी समारोह के साथ कुमार को नगर प्रवेश कराया। यहां श्रीचन्द्र कुमार से प्रार्थना की कि कुमार! हंसावली के मनोरथ तो दैव योग से सफल न हो सके। पर हमारी एक प्रार्थना को आप सफल बनावें। हंसावली की छोटी बहिन चन्द्रावली विवाह के योग्य हो चुकी है, उसका पाणि ग्रहण करके हमें कृतकृत्य करें।

हंसावली, मदन सुन्दरी और राजा वज्रसिंह के विशेष आग्रह करने पर श्रीचन्द्र ने विवाह मंजूर किया। बड़े ठाठ के साथ विवाह संपन्न हुआ। कुछ दिन के लिए कुमार यहां ठहरे।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

CALTRONIX
12 India Exchange Place
3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
Vegetarian Restaurant
At
Lee Road
Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
87, S.N. Pandit Road
Kolkata - 700 025
Phone: 2455-2081, 2454-7127
Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Phone : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653
Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane,
Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Phone: (R) 2259-3885
(M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane
Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PHONES : 2220 5059 / 2220 1130
EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street
Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127
Kolkata - 700 017
Phone : 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Phone: 2280-0494, 2287-2650,
Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
Gaddi - Golkothi, Bhagalpur
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street
Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2236-8523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor
Desence Colomy
Indria Nagar, Bangalore-- 38
Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street
Kolkata - 700 071
Phone :

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building
Phone : 2369 0054
Res oberoi gardens Thakur Village
Kandewali East Mumbai
'C' hring flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 , Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer

From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT

1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016

PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482

CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN

FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

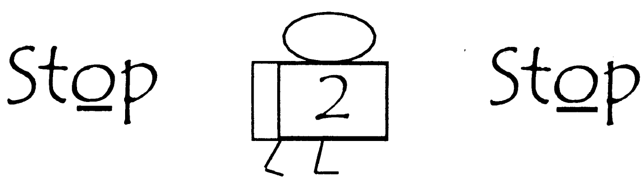

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street

3rd floor, Block-A

Kolkata - 700 007

Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056

Fax : 2283 6643

Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO.2. TITTHAYARA May 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225